

IOC and FIFA,
When will the
TRAGEDIES
of your Games End?

दशक 1



वृहत खेल आयोजनों में सम्मान पूर्वक काम
(डिसेंट वर्क) के लिए बीडब्लूआई का हस्तक्षेप



BWI • BCL • BCL • BCL • BCL • BCL
www.bwint.org

배결 없어... 있다!
대한민국 노동자

건설노동자 착취에서 치르는 올림픽 반대 및 대보건설 규탄 기자회견



**NO MORE DEATHS
IN THE NAME
OF SPORTS**



BWI
Building and Wood
Workers' International
www.bwint.org

**RED CARD
FOR
FIFA**
NO WORLD CUP WITHOUT
WORKERS' RIGHTS

**RED CARD
FOR
FIFA**
NO WORLD CUP WITHOUT
WORKERS' RIGHTS



www.bwint.org

**RED CARD
FOR
FIFA**
NO WORLD CUP WITHOUT
WORKERS' RIGHTS



www.bwint.org

**RED CARD
FOR**

शुरुआत

बीडव्लूआई की ग्लोबल स्पोर्ट्स कैम्पेन 10 वर्ष पूर्व शुरू की गयी थी | एक दशक पूर्व नैरोबी (कीनिया) में वर्ल्ड सोशल फोरम के दौरान दक्षिण अफ्रीका में 2010 में होने वाले फीफा वर्ल्ड कप को ध्यान में रखते हुए बीडव्लूआई ने मेगा स्पोर्ट्स आयोजनों के समय डिसेंट वर्क (सम्मान पूर्वक काम) सुनिश्चित करने के लिए नवाचारी वैश्विक अभियान शुरू किया था |

अभियान के दो मुख्य उद्देश्य थे – निर्माण श्रमिकों को ट्रेड यूनियन में संघटित करना और उससे भी महत्वपूर्ण निर्माण क्षेत्र, जोकि वर्ल्ड कप के बाद भी रहेगा, में सुरक्षा और श्रम मानकों को बेहतर बनाना | दस वर्षों में यह पायलट कैम्पेन बीडव्लूआई के संस्थागत कार्य का हिस्सा बन गया है जो कि ब्राजील में होने वाले वर्ल्ड कप 2014 और रियो ग्रीष्मकालीन ओलंपिक 2016, पोलैंड और यूक्रेन में यूरो कप 2012 और वर्तमान में रूस और कतर में होने वाले 2018 और 2022 फीफा वर्ल्ड कप, प्योंगचोंग दक्षिण कोरिया में होने वाले शीतकालीन ओलंपिक 2018, टोकियो में होने वाले ग्रीष्मकालीन ओलंपिक 2020 के अभियानों में दर्शित होता है |

“दशक एक” बहुत ही महत्वपूर्ण प्रकाशन है, इसमें बीडव्लूआई सहयोगियों की श्रमिकों को सफलता पूर्वक संगठित करने और उनकी लामबंदी से हड़ताल और काम रोकने की आक्रामक कार्यनीतियों का विवरण है | जिनके कारण निर्माण कंपनियां वार्ताकरने के लिए मजबूर हुईं और सामूहिक अनुबंधों के कारण बहुत आवश्यक सामाजिक लाभों के साथ मजदूरी में बढ़ोतरी, काम के निश्चित घंटे और सुरक्षा और स्वास्थ्य की स्थितियों में सुधार हुए |

इसी के साथ इस प्रकाशन में बीडव्लूआई के वैश्विक स्तर पर निर्माण कम्पनियों और अंतर्राष्ट्रीय खेल संघों के साथ की गयी महत्वपूर्ण पहल विशेषकर फीफा और डिलिवरी और लेगेसी के लिए सुप्रीम कमेटी (एससी) कतर के साथ निरंतर प्रयासों से स्वास्थ्य और सुरक्षा पर संयुक्त निरीक्षण पर सहमति और कामगारों की शिकायतों के निवारण के लिए दीर्घकालीन तंत्र विकसित करने पर विचार-विमर्श शुरू होने का विवरण है |

यह ऐतिहासिक प्रकाशन है इसमें बीडव्लूआई के गत 10 वर्षों के काम का विवरण और हमें याद दिलाता है की एक दशक पूर्व का वातावरण आज की तुलना में बहुत अलग था | जागरूकता की बहुत कमी थी, या सच कहें तो, मेगा-स्पोर्ट्स आयोजनों में मानवाधिकारों और श्रमिक अधिकारों के जुड़ाव के महत्व पर सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय खेल संघों, कम्पनियों, प्रशंसकों और सामान्य लोगों किसी की भी रुचि नहीं थी | आखिरकार खेल मजे और मनोरंजन के लिए ही थे, ये कोई श्रमिकों को सम्मान जनक मजदूरी, भेदभाव और शोषण मुक्त सुरक्षित कार्य वातावरण को सुनिश्चित करने के लिए तो नहीं थे |

आज मानव अधिकार और श्रमिक अधिकार मेगा खेलों में मुख्यधारा बन गए हैं | ये अब संयुक्तराष्ट्र (यूएन) और अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संगठन (आईएलओ) जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों के नियमित विमर्श का हिस्सा बन गये हैं | खेल आयोजनों से जुड़ी हुई कंपनियां अधिक सजग हो गयी है और श्रमिकों के अधिकारों के उलंघन के लिये अपनी प्रतिष्ठा और नाम को जोखिम में डालना नहीं चाहती है | सरकारें भी मानने लगी है कि यदि वे मेगा-स्पोर्टिंग इवेंट की मेजबानी करती है तो श्रमिकों के अधिकारों को संरक्षित किया जाना चाहिए |

बीडव्लूआई वैश्विक खेल अभियान के अगले दशक में क्रियान्वयन की और उन्मुख है इसलिए विभिन्न अभिनवी कार्य-नीतियों के स्थाई संस्थागत ढांचे को स्थापित करने में निश्चय ही चुनौतियां हैं | रूस और कतर में ट्रेड यूनियनों के साथ हो रहे संयुक्त सुरक्षा और स्वास्थ्य निरीक्षण भविष्य में मेगा-स्पोर्टिंग आयोजनों की मेजबानी करने वाले देशों के बोली के आधिकारिक दस्तावेज का हिस्सा बनाया जाना चाहिये | अभियान का सामान्य नाम “डिसेंट वर्क टुवर्ड्स एंड बियॉड” किसी भी देश की श्रम सम्बन्ध प्रणाली में विरासत की आवश्यकता को रेखांकित करता है | डिसेंट वर्क (सम्मानजनक काम) लक्ष्य मेगा-स्पोर्टिंग आयोजनों से और निर्माण कम्पनियों तक सीमित नहीं है, यह एक राष्ट्रीय प्रणाली और अंतर्राष्ट्रीय सुधार (इंटरनेशनल रिफॉर्म) एजेंडा दोनों है |

वैश्विक खेल अभियान की सफलताएं बीडव्लूआई के सैकड़ों सहयोगियों जिन्होंने विभिन्न तरीकों से सदस्यों को संगठित किया, के समर्थन के बिना संभव नहीं थी | राष्ट्रीय खेल संघों से मीटिंग से रेड कार्ड को उठाना, हड़तालों के आयोजन से त्रिपक्षीय अनुबंध, श्रमिकों के निरीक्षण के लिए विशेषज्ञ भेजने से प्रवासी श्रमिकों को संगठित करने, और सार्वजनिक बहसों के आयोजन के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने में डिसेंट वर्क के लिए बीडव्लूआई परिवार पूरी तरह एकजुट रहा |

अंत में ट्रेड यूनियनों के बराबरी के भागीदार के रूप में मान्यता ही ओलंपिक और वर्ल्ड कप के श्रमिक मित्र होने के लिये और मेगा-स्पोर्टिंग आयोजनों के पहले, दौरान और बाद में कामगारों के अधिकार और डिसेंट वर्क (सम्मानजनक काम) को सुनिश्चित करने का एकमात्र तरीका है |

दिसम्बर 2017
जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड

विषय-सूची

स्पोर्ट्स : प्रतियोगिताए और काम का इतिहास	1
बीडब्लूआई के ग्लोबल स्पोर्ट्स अभियान की साउथअफ्रिका में शुरुआत	5
ब्राजील में डिसेंट वर्क अभियान	11
भविष्य के मेगा स्पोर्ट्स इवेंट्स के लिए महत्वपूर्ण कदम	17
भविष्य के लिए डिसेंट वर्क अभियान	26

बीडब्लूआई, स्वतंत्र और जनतांत्रिक यूनियनों जिनके सदस्य बिल्डिंग, बिल्डिंग मटेरियल, वुड, फॉरेस्ट्री और सम्बद्ध क्षेत्रों में है का ग्लोबल यूनिशन फेडरेशन है।

बीडब्लूआई 130 देशों के लगभग 1.2 करोड़ सदस्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले 334 ट्रेड यूनियनों एक साथ जोड़ता है। इसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में है और क्षेत्रीय कार्यालय पनामा, मलेशिया और दक्षिण अफ्रिका में है।

हमारा मिशन श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा और उन्हें आगे बढ़ाना तथा हमारे सेक्टर में काम और रिहाईश की स्थितियों में बेहतर है। इन सबके ऊपर बीडब्लूआई का दृष्टिकोण आधारित है। हमारा मानना है कि ट्रेड यूनिशन अधिकार मानव अधिकार है और समानता, एकजुटता और जनतंत्र पर आधारित है और सुशासन के लिये ट्रेड यूनिशन अपरिहार्य है।

बीडब्लूआई के लक्ष्यों में 1- मानव अधिकार और ट्रेड यूनिशन के अधिकारों की रक्षा और प्रोत्साहन; 2- ट्रेड यूनिशन के सामर्थ्य का विस्तार; 3- हमारे सेक्टर में स्थिर और उच्च स्तर के रोजगार प्रोत्साहन; 4- नीतियों को प्रभावित करना और हमारे सेक्टर में संस्थागत क्षमता और त्रिपक्षीय संरचनाओं का विकास।

© बिल्डिंग एंड वुड वर्कर्स इंटरनेशनल (बीडब्लूआई). इस प्रकाशन के हिस्सों का उपयोग स्रोत की स्वीकार्यता के साथ किया जा सकता है।

दशक एक (डिकेड वन) का प्रकाशन एलओ नॉर्वे के सहयोग से किया गया है।

फोटो क्रेडिट : एफएल-सीआईओ (पृष्ठ 16), एससी कतर (पृष्ठ 17), बीईएसईक्स (पृष्ठ 27), और स्क्रीन कैप्चर फीफा वेबसाइट से (पृष्ठ 27) के अलावा इस्तेमाल की गयी तस्वीरें बीडब्लूआई के फोटो संग्रह से हैं।

स्पोर्ट्स : प्रतियोगिताएँ और काम का इतिहास

जब खेलों के बारे में बात करते हैं तो हमारा आशय क्या है ? यह गतिविधियों का एक ऐसा संयोजन है जिसने प्रागैतिहासिक काल से मानव को आकर्षित किया है । खेल के सबसे पुराने चित्रण दक्षिणी-पश्चिम फ्रांस में लास्केक गुफाओं में पाए जाते हैं, अपर पैलेओथिक युग में चलने वाली कुश्ती और रेस का चित्रण 15000 वर्षों से भी अधिक पुराना है, मंगोलिया के बयांखोंगोर प्रांत में पुरातत्वविदों ने 7000 ई.पू. के गुफा चित्रों की खोज की है जिसमें पहलवानों को भीड़ से घिरा दिखाया गया है, जो इंगित करता है कि दर्शकों के खेल की आधुनिक अवधारणा वास्तव में 9000 साल से भी अधिक पुरानी है । प्राचीन सुमेरियन भी खेलों में लगे रहे हैं – वास्तव में साहित्य के सभी ज्ञात कार्यों में सबसे पुराने गिलगमेश महाकाव्य में बेल्ट-कुश्ती के खेल में अपने एक मित्र एन्किदु से लड़ रहे नायक का वर्णन है । प्राचीन मिश्र में कई तरह के बॉल गेम सहित विविध खेल खेले जाते रहे हैं जो की सबसे पुराने ज्ञात समूह खेल हो सकते हैं ।

आधुनिक खेलों पर सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन प्रभाव ग्रीस में मिलता है । प्रमुख खेल आयोजनों का पौराणिक कथाओं से जुड़ाव खेल के लिए ग्रीक द्रष्टिकोण का मूलभूत घटक है । देवता माउंट ओलम्पस में रहते थे इसलिए बहुत से ओलंपिक मिथकों में देवता शामिल हैं । वर्तमान धर्मनिरपेक्ष समय और युग में, वास्तव में कुछ गिने-चुने ऐसे हैं जो मानते हैं कि आधुनिक ओलंपिक या फीफा विश्व कप देव प्रेरित हैं, परन्तु खेलों का हमेशा से विशेष मायने, दर्जा और प्रतिष्ठा रही है । खेल दुनिया भर के लोगों को प्रेरित करते हैं, उनके दिल और दिमाग को बेहतर बनाते हैं और प्रसन्नता देते हैं । ये लाखों लोगों की उम्मीदों, सपने और आकांक्षाओं के प्रतीक हैं । समूह खेलों के प्रशंसक प्रायः एक दूसरे से खेल-राजनीति, धर्म, और अन्य विभाजनकारी संकीर्ण दायरों पर भेद करते हैं । खेल दुनिया की सबसे लोकप्रिय सांस्कृतिक गतिविधि और सबसे बड़ा साम्प्रदायिक अनुभव दोनों हैं । यह प्रतिभागियों और दर्शकों दोनों के लिए करीब-करीब समानरूप से आध्यात्मिक महत्व का हो सकता है। प्राचीन ग्रीक ही संरचनात्मक डिजाइन की अवधारणा जो कि स्पोर्ट्स एरीना (खेल क्षेत्र) के तौर पर जानी जाती है, के आविष्कारक और विकासक रहे हैं ।



ओलंपिया और अन्य स्थानों पर उन्होंने खिलाड़ियों और दर्शकों दोनों के लिए सुविधाजनक संरचनाएँ बनाईं। भले ही प्राचीन और आधुनिक खेल-क्षेत्रों में कार्य और स्वरूप में व्यापक अंतर हो दोनों में एक समानता अवश्य है कि वे किसी के बनाये हुए ही हैं। प्राचीन ओलंपिक में केवल स्वतंत्र ग्रीक पुरुष ही प्रतियोगी होने की योग्यता रखते थे जबकी यूनानी समाज में गुलामी (दासता) सर्वभौमिक स्वीकार्य थी, इसलिए यह निश्चित तौर पर माना जा सकता है की प्रमुख खेल-क्षेत्र दास श्रम से ही निर्मित किये गये। आज, दुनिया के लगभग सभी देशों में अधिकारिक तौर पर गुलामी समाप्त हो चुकी है किन्तु वैश्विक खेल उद्योग में निर्माण श्रमिकों को काम की असुरक्षित स्थितियाँ, उपयुक्त आवास की कमी, भोजन और पानी की अपर्याप्त आपूर्ति, कम मजदूरी (या अक्सर बेगारी) और श्रमिकों के संगठित होने और सामूहिक मोलभाव के अधिकार पर प्रतिबन्ध जैसे कई तरह के व्यवसायिक खतरों को झेलने के लिए मजबूर होते हैं। उदाहरण के तौर पर कतर और रूस में रोजगार अनुबंधों में उन्हें व्यक्तियों और कम्पनियों की हिरासत में रखने का प्रावधान है।

व्यवसायिक खेलों की शुरुआत के बाद से, अभिजात्य वर्ग के खेलों में वाणिज्यिक पहलू प्रमुख हो गया है, वैसे वैश्विक मनोरंजन उद्योग की शाखा के तौर पर इसमें परिवर्तन की शुरुआत 1974-1980 की अवधि में हुई, यही वो समय भी है जब दो प्रमुख निकाय फीफा और इंटरनेशनल ओलंपिक कमिटी जो कि सबसे लोकप्रिय खेलों की देखरेख करते हैं, के निर्वाचित अध्यक्षों के सत्ताधारी व्यवस्था के साथ मजबूत सम्बन्ध थे। सैन्य तानाशाही के वर्षों के दौरान फीफा के प्रमुख चुने जाने के समय जोआओ

हवेलंगे, ब्राज़ीलियाई ओलंपिक समिति के सदस्य और ब्राज़ीलियाई स्पोर्ट्स कॉन्फेडरेशन के अध्यक्ष थे। इसी तरह आईओसी में, जुआन एंटोनियो समरंच ने स्पेन में फ्रेंको की फलंगिस्ट सरकार के तहत खेल के मंत्री सहित कई क्षमताओं में काम किया था। दोनों ही मौलिक रूप से निरंकुश नेतृत्व, परिश्रमी और बाजारमुखी होने के साथ अपने क्षेत्रों में दूरदर्शी माने जाते थे।

अमेरिकी राष्ट्रपति रोनल्ड रीगन और ब्रिटिश प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर के चुनावों के बाद उभरने वाली "वाशिंगटन आम सहमति" (वाशिंगटन कोनसेंसस) की मानसिकता ने खेल की दुनिया को प्रभावित किया। आकर्षक प्रसारण अधिकारों और अन्य मार्केटिंग अवसरों के विकास के साथ मेगा-खेल, खेल के मूल्यों के रक्षक बने, लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण, पैसे बनाने वाली मशीनें। ये दोनों प्रणालियाँ प्रायः अंतर्विरोधी रही। प्रायोजन अनुबंध सामान्य और महंगे हो गए। कुछ विशिष्ट एथलीट, जैसे कार्ल लुईस या डिएगो मैराडोना वैश्विक (ग्लोबल) "ब्रांड" बन गए।

1992 में बार्सिलोना ओलंपिक इस अंतर्विरोध और बदलाव के प्रदर्शन का गवाह बना, जब आईओसी ने अपने लोकाचार से लंबे समय तक प्रतिबंधित रखे गए एनबीए पेशेवरों को बास्केटबॉल टूर्नामेंट में भाग लेने की इजाजत दी। माइकल जॉर्डन, परम ब्रांड-एथलीट के साथ उनके बीच में, "ड्रीम टीम" उन सभी के सामने हार गयी। सभी हदों को पार करते हुए स्पोर्टिंग प्रतियोगिता की तुलना में खेल एक एथलेटिक विशेष का प्रदर्शन मात्र रह गया। जो लोग खेल को मुख्यतः मनोरंजन की एक विधा के तौर पर देखते थे उनके लिए यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है।



बारसिलोना 1992 में एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई दिया। संभवतः पहली बार एक ओलंपिक या विश्व कप प्रतियोगिता महज एक प्रमुख खेल आयोजन के रूप में ही नहीं देखी गयी बल्कि शहरी उत्थान के साधन के तौर पर भी देखी गयी। कैटलन राजधानी ने ओलंपिक के आयोजन का उपयोग महत्वाकांक्षी परियोजनाओं की श्रृंखला शुरू करने के लिए किया जिससे शहर जीवंत, आगंतुक-मित्र और पर्यटकों के आकर्षण केंद्र के तौर पर रूपांतरित हो गया। तभी से हर भावी मेजबान शहर खेल आयोजनों की देखरेख करने वाली दोनों संस्थाओं और अपने नागरिकों को बुनियादी ढांचे, आर्थिक प्रगति, प्रतिष्ठा, छवि और "जीवन की गुणवत्ता" के संदर्भ में की जा सकने वाली संभावित प्रगति को दिखाकर लुभाने का प्रयास करता रहा है।

हालाँकि बारसिलोना ओलंपिक के अनुभव को सामान्यतः सफल माना जाता रहा है, लेकिन इस मॉडल का अनुसरण सभी स्थितियों में कारगर नहीं हो सकता है। ओलंपिक ने कई बारसिलोना के निवासियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया हो सकता है, लेकिन यह संभव नहीं है कि रियो डी जनेरियो के अपने घरों से बेदखल हजारों निवासी भी उनके शहर में ओलंपिक की विरासत के बारे में उसी तरह महसूस करते होंगे।

विगत 25 वर्षों से खेल के मालिक और आयोजक सामान्य व्यवहार में मानते रहे हैं कि एक सफल खेल आयोजन भर पर्याप्त नहीं है। बल्कि, इन आयोजनों से मेजबान शहरों में बड़े बदलाव को प्रभावित करने की संभावना भी है। अधिकारिक संचार और संवर्धन प्रयासों में ओलंपिक्स और विश्व कप को मेजबान शहर में सभी के लिए व्यापक लाभदायक आयोजन की तरह बेचा जाने लगा है, जबकि वास्तव में कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री के केवल बड़े ठेकेदार या अन्य कंपनियों और खेल संबंधी व्यवसाय से लाभ कमाने वाले ही प्रायः इनके लाभार्थी होते हैं।

ठेकेदारों और स्थानीय आयोजन समितियों सहित व्यापारिक हितों के मध्य घनिष्ठ संबंधों से भ्रष्टाचार का खतरा बढ़ जाता है जैसा कि 2014 के विश्व कप की तैयारी और उसी वर्ष आयोजित सोची ओलंपिक के दौरान देखा गया था। ब्राजील के पूर्व कप्तान और राजनीतिक कार्यकर्ता सॉफ्रेट्स ने तो अनुभव किया कि, "विश्व कप का उद्देश्य कुछ लोगों को बहुत पैसा कमाने में मदद करना है।"

ओलंपिक्स और वर्ल्ड कप के मध्य एक महत्वपूर्ण अंतर है। कम से कम 1930 से आयोजन विशेष के लिए स्टेडियम और अन्य खेल क्षेत्रों का निर्माण ओलंपिक्स में सामान्य मानक रहा है जबकि वर्ल्ड कप में इसे बहुत बाद में अपनाया गया। कई विश्व कप स्टेडियम - सबसे महत्वपूर्ण रूप से रियो में मारनाकाना - इस आयोजन के उद्देश्य से बनाया गया था, फीफा अपनी सामान्य कार्यप्रणाली में उन देशों का चयन करता रहा जिनमें पहले से ही फुटबॉल संस्कृति स्थापित रही है और इसलिए स्टेडियम की आवश्यकता रही है।

1994 तक एक भी नए खेल क्षेत्र का निर्माण नहीं किया गया था, हालाँकि उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका में पर्याप्त आकार का कोई फुटबॉल विशिष्ट स्टेडियम नहीं था और टूर्नामेंट का आयोजन अमेरिकी फुटबॉल और/या बेसबॉल क्षेत्रों में हुआ। 1998 के विश्व कप के लिए, फ्रांस ने सेंट डेनिस में पैरिस के उपनगर में एक नया राष्ट्रीय स्टेडियम बनाया था अन्यथा प्रत्येक आयोजन स्थल एक पेशेवर फुटबॉल क्लब का पहले से ही मौजूद स्टेडियम ही रहा।

जापान और कोरिया में 2002 के विश्व कप की तैयारी के दौरान प्रमुख बदलाव हुआ। यह पहला अवसर था जब



टूर्नामेंट यूरोप और अमेरिका के बाहर आयोजित किया गया था, और पहली बार दो देशों ने इसकी सह-मेजबानी की थी। आठ साल पहले अमेरिकी विश्व कप की तरह, फीफा का यह भी फुटबॉल की पहुंच के विस्तार का एक स्पष्ट इरादा था, लेकिन इस बार मेजबानों ने पुरजोर दिखावे का निर्णय लिया। टूर्नामेंट के 64 मैचों का आयोजन 20 अलग-अलग स्टेडियम (प्रत्येक मेजबान देश में 10) में होना था और इनमें से अधिकांश बिल्कुल नयी, चमकदार और भविष्योन्मुखी संरचनाएँ थीं। हालाँकि बाद के किसी मेजबान ने जापान और कोरिया जैसे अतिरेक दिखावे का प्रदर्शन तो नहीं किया किन्तु आयोजन विशिष्ट (प्रायः अनावश्यक) स्टेडियम निर्माण के प्रति रुझान निरंतर रहा और भविष्य में भी इसके रहने की संभावना है। दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील में, विश्व कप के स्टेडियमों का निर्माण उन शहरों में किया गया था जिनसे उस समय पूरी तरह से पेशेवर क्लब साइट भी नहीं थे। नतीजतन वे अपने रखरखाव के भुगतान के लिए पर्याप्त राजस्व उत्पन्न करने में असमर्थ सफेद हाथी बन गये। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इनमें से अधिकांश स्टेडियम कर दाताओं के खर्च पर बिना उनकी सहमति और परामर्श के निविशकों और बिल्डर्स को और अधिक संपन्न बनाने की लिए ही बनाये गए थे। ●

CAMPAIGN FOR DECENT WORK TOWARDS AND BEYOND 2010



R30BN. MAKE PUBLIC MONEY WORK FOR THE PUBLIC GOOD!

Did you know?

The salaries of the CEO of Murray & Roberts, increased by 40% totalling R7,4m and the CEO of Aveeng, increased by 47% totalling R4,7m for the 2006 financial year.

The current minimum wage of R11 per hour for a general worker for a 44 hour week amounts to R484 per week or R1936 per month!

The current minimum wage for a skilled artisan is R26 per hour or R1144 per week or R4576 per month.

It will take a general worker 139 years to earn the average income of a construction sector executive in one year!

Workers at Green Point went on two strikes in September and won their demand for transport.

Workers at the Gautrain project went on strike in September and won their demand to remove racist managers.

Trade unions united in the construction sector will lead campaign launches at all sites

Building Construction and Allied Workers Union (BCAWU)

National Union of Mine Workers (NUM)

South African Building and Allied Organisation (SABAWO)

What are our Demands to ensure Decent Work?

1. **The right to work, to organise and to bargain** – access to construction sites and to workers for the purposes of communicating their rights and recruitment, without fear of discrimination.
2. **Decent work** – agreements with companies must ensure that there is real improvement in wages, working conditions and safety for workers.
3. **A living wage** – a wage that takes workers out of poverty.
4. **Zero accidents** – enforcement of health and safety measures and full-time health and safety union representatives on site.
5. **No downward variation** – all subcontracting terms to reflect those of the principal tender.
6. **Quality jobs** – maximise the creation of quality jobs, especially for women and youth so as to contribute to resolving unemployment.
7. **Improve basic conditions** – decent accommodation and improvement in working conditions for all workers.
8. **Health awareness** – promote awareness of HIV/AIDS; provide voluntary testing, accessible counselling and treatment.
9. **Skills development** – effective skills development programmes that promote the future employability of workers.

How do we achieve Decent Work?

- Join a trade union at their construction sites.
- Be active in launching the campaign at the site.
- Be active in campaign activities.
- Stand united in ideas and action.



DECENT WORK CAMPAIGN SITE LAUNCH

Where:

Date:

Time:

Published by: Building & Wood Worker's International and Labour Research Service, 2007.



बीडब्लूआई के ग्लोबल स्पोर्ट्स अभियान की साउथअफ्रिका में शुरुआत

बिल्डिंग एंड वुड वर्कर इंटरनेशनल ने 2007 में नैरोबी में होनेवाले सोशल फोरम के दौरान मेगा स्पोर्ट्स इवेंट में श्रमिकों के अधिकारों पर ध्यान केन्द्रित करने का निर्णय लिया। इस विचार को 2010 की तैयारी के बारे में चिंतित अफ्रीकी प्रतिनिधियों ने बीडब्ल्यूआई के सामने रखा, दक्षिण अफ्रीका में उस समय, आगामी विश्व कप का मीडिया कवरेज मुख्य रूप से मेजबान देश में व्यापक हिंसक अपराध पर केंद्रित था, अटकलें लगाई जा रही थी कि विदेशी प्रशंसकों की यात्रा के लिए यह सुरक्षित होगा या नहीं। स्टेडियम और अन्य बुनियादी संरचनाओं के निर्माण के मुद्दे पर भी लगभग हमेशा यही चिंता व्यक्त की जा रही थी कि परियोजनायें समय पर पूरी हो जाएंगी या नहीं।

दक्षिण अफ्रीका में निर्माण मजदूरों के लिये कार्यवाही नितांत आवश्यक थी। 132 देशों में 1 लाख से अधिक सदस्यों के साथ 326 ट्रेड यूनियनों का प्रतिनिधित्व करने करने वाला बीडब्लूआई इस महती कार्य करने के लिये पूरी तरह से तैयार था।

विभिन्न राष्ट्रीय, महाद्वीपीय और वैश्विक श्रमिक संघों के साथ आयोजित होने वाले अभियान को "उचित खेल, निष्पक्ष खेल – डिसेंट वर्क (सम्मान के साथ काम) 2010 और उसके आग" कहा गया। यह विशेष रूप से उचित था क्योंकि खेल सुविधाओं के निर्माण के दौरान मृत्यु और चोटों की बढ़ती हुयी संख्या मानव की अर्जित उपलब्धियां पर मनाये जाने वाले जश्र के साथ न्याय संगत नहीं ही बैठती थी।

अभियानकर्ताओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा – कम और प्राय अनियमित मजदूरी, अपर्याप्त सुरक्षा और संरक्षण और ठेकेदारों और उप-ठेकेदारों जिनके कार्य प्रणालीयों ने श्रम मानकों के प्रभावी होने पर लगाई गयी रोक; कार्पोरेट्स उत्तरदायित्वों से बचने के लिये कार्यदायी कंपनियों के बनाये गए जटिल ताने-बाने

जैसी बातें ही मेगा स्पोर्ट्स इवेंट्स की प्रमुख बातें रहीं। अभियानकर्ताओं के अनुसार दक्षिण अफ्रीकी सरकार को मजदूरों के अधिकारों की चिंता से ज्यादा राजस्व पैदा करने और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त करने की प्राथमिकता ने इन समस्याओं को और जटिल कर दिया था। मेगा स्पोर्ट्स आयोजनों का लक्ष्य था बदलाव मगर यह बदलाव अधिक लोगों के संसाधनों को कुछ लोगों के हाथ में देने भर का बन कर रह गया था।

फीफा अपने लोकप्रिय टूर्नामेंटों से उत्पन्न राजस्व से कर का भुगतान नहीं करता बल्कि स्थानीय आयोजन समितियों उनके राजनैतिक समर्थकों और मेजवान देशों के नागरिकों को खर्च का अधिकतर भाग वहन करना पड़ता है। विश्व संगठन निर्माण स्थलों पर श्रमिकों के नियुक्ता के रूप में अपनी ज़िम्मेदारी को स्वीकार करने बचता रहा है। इससे एक विचित्र स्थिति निर्मित हुई, जिन्होंने फीफा के सबसे प्रतिष्ठित आयोजन को पूरा करने में महती योगदान दिया वे ही महान धर्मनिरपेक्ष संत की नेल्सन मंडेला की मातृभूमि अफ्रीका में आयोजित पहले विश्व कप से प्रभावी ढंग से नज़र अन्दाज़ कर दिये गये।

अभियान कि शुरुआत में बीडवूआई और सम्बद्ध यूनियनों ने 8 प्रमुख मांगे या उद्देश्य चिन्हित किये थे जो इस प्रकार हैं - काम करने के अधिकार की पहचान, निर्माण स्थलों और निर्माण श्रमिकों तक पहुंच सहित संगठित करने और बार्गेन करने का अधिकार डिसेंट वर्क (उचित काम), निर्वाह मजदूरी, शून्य दुर्घटना, काम की शर्तों में कोई निम्न स्तरिय बदलाव नहीं, उत्तम काम, बुनियादी स्थितियों में सुधार, स्वास्थ्य और सुरक्षा जागरूकता और भविष्य के रोजगार के लिए कौशल विकास। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए चार महत्वपूर्ण आयामों की समग्र रणनीति बनाई गई।

साउथ अफ्रीका में वर्ल्ड कप 2010 के अभियान की कार्य योजना

अभियान के लिए पहला आयाम था कामगारों को संगठित करना। कई अन्य प्रयासों के साथ बहुसंख्य कामगारों को ट्रेड यूनियन में शामिल होने का अवसर देने के लिए बड़ी संख्या में निर्माण स्थलों पर दौरे किये गये। इस प्रयास में 27000 से अधिक नए सदस्य जुड़े जो कि जुलाई 2009 की राष्ट्रीय हड़ताल के लिए बहुत महत्वपूर्ण था।





कार्य की स्थितियों को समझने के लिए रिसर्च (शोध) दूसरा महत्वपूर्ण कार्य था। इसी के साथ वर्ल्ड कप की लागत, इसकी तैयारियों से अपेक्षित लाभ, निर्माण क्षेत्र में हुए अनुबंधों और सरकारी खरीद प्रक्रिया पर सूचनाओं का व्यापक प्रसार किया गया। हालांकि शुरुआत में वर्ल्ड कप से सम्बंधित अवस्थापना परियोजनाओं में निर्माण श्रमिकों की स्थिति पर मिडिया और लोगों की रुचि बहुत कम थी जिसमें अभियान के आगे बढ़ने के साथ परिवर्तन आने लगा।

अभियान का तीसरा महत्वपूर्ण पहलू था नेगोशिएशन (बातचीत). मार्च 2008 और मई 2009 में कार्यशालाओं में प्रत्येक स्तर पर नेगोशिएशन के तौर-तरीके सिखाये गए। परिणामस्वरूप नेगोशिएशन के प्रभाव बेहतर होने लगे, स्थानीय स्तर पर कामगारों ने कार्यस्थलों पर मोलभाव शुरू किये तथा राष्ट्रीय स्तर पर भी बड़ी सफलता मिली और 2006 की मजदूरी की 8 प्रतिशत की बढ़ोतरी की सीमा के प्रतिबन्ध को हटा लिया गया, जोकि बाद में साउथ अफ्रीका में अपेक्षा से अधिक महंगाई बढ़ने के कारण अपर्याप्त हो गया। इस मुद्दे पर बातचीत में अस्थाई रुकावट के चलते 2008 में कई कार्य स्थलों पर हड़तालें हुईं और

नियोक्ता बातचीत के लिए मजबूर हुए और 3 प्रतिशत की अतिरिक्त वेतन वृद्धि पर सहमती हुई।

चौथा आयाम था प्रचार-प्रसार। इसमें फीफा और मीडिया दोनों के साथ सीधे जुड़ाव की बात थी, जो अबतक यह मान चुके थे कि वर्ल्ड कप से सम्बंधित निर्माण इंडस्ट्री में निर्माण श्रमिकों की स्थिति एक प्रमुख समाचार बन चुकी है। हालांकि फीफा लगातार जोर देता रहा कि उसे टूर्नामेंट की तैयारियों में लगे लोगों के नियोक्ता तौर पर नहीं माना जा सकता है किन्तु 2007 में शुरू हुई हड़तालों से उत्पन्न नकारात्मक प्रचार से फीफा ने इन मुद्दों को गंभीरता से लेना शुरू किया या ऐसा दिखाने का प्रयास शुरू किया।

मार्च 2008 में, बीडब्ल्यूआई के प्रतिनिधियों ज्यूरिख में तत्कालीन अध्यक्ष सेप ब्लैटर सहित फीफा प्रतिनिधियों से मुलाकात की। उन्होंने वादा किया कि फीफा, दक्षिण अफ्रीका सरकार और स्थानीय आयोजन समिति दोनों के साथ निर्माण श्रमिकों के अधिकारों से संबंधित मुद्दों को उठाएगा, ट्रेड यूनियनों को भविष्य की साइट निरीक्षण में



रूस और कतर द्वारा 2018 और 2022 के विश्व कप की मेजबानी की घोषणा

जोहान्सबर्ग में विश्व कप फाइनल के पांच माह से भी कम समय में 2 दिसंबर 2010 को, 2018 और 2022 टूर्नामेंट की मेजबानी तय करने के लिए ज्यूरिच में फीफा कार्यकारी समिति बुलाई गयी। मतों के परिणामों ने खेल की दुनिया को चौंका दिया। रूस और कतर को मेजबानी के अधिकार देने में कार्य समिति, खेल की नैतिकता, मित्रता और एकजुटता के लिए उन प्रतिबद्धताओं की अनदेखी करती दिखी जो की दक्षिण अफ्रीका में विश्व कप के दौरान बहुत व्यापक थी। रूस तो एक मजबूत फुटबाल संस्कृति का देश है परन्तु कतर में वर्ल्ड कप का निर्णय बहुत से पर्यवेक्षकों के लिए असामान्य सा ही है। फीफा की फुटबाल की पहुँच के विस्तार के प्रयासों का यह एक और उदाहरण है और कतर के लिए इस मेजबानी के जरिये अपनी स्थिति और विस्तार को दिखाने का मौका। यह चयन चुनाव में भ्रष्टाचार के आरोपों सहित कई विवादों को उत्पन्न करता है।

हालांकि रूस और कतर भविष्य के लिए गंभीर चिंता का विषय है परन्तु अल्पावधि में ध्यान वापिस यूरोप की तरफ है जहाँ लन्दन ओलिंपिक और यूरोपीयन चैम्पियनशिप दोनों ही क्रमशः पोलैंड और यूक्रेन में 2012 में आयोजित होने हैं। यूक्रेन में आयोजित होने वाली यूरोपीयन चैम्पियनशिप 1980 के मास्को ओलिंपिक, जिसका व्यापक बहिष्कार हुआ था, के बाद पूर्वी यूरोप में होने वाला पहला बड़ा खेल आयोजन है। मीडिया का ध्यान मेजबान देशों में चल रही मान्यताओं के डर पर आधारित था। उदाहरण के लिए यह सुझाव दिया गया था कि अश्वेत प्रशंसकों के लिए यूक्रेन में प्रवेश में जोखिम होगा। वास्तव में, टूर्नामेंट के दौरान यही मुख्य मानव अधिकारों की समस्या थी हालांकि, यूक्रेनी पुलिस बल को सभी आगंतुकों की सुरक्षा के लिए सख्त आदेश दिये गए थे, वे अपने स्वयं के नागरिकों के साथ क्रूरता से पेश आये और उन्हें को परेशान किया।

शामिल किया जाएगा और फीफा तथा यूनियनों के मध्य संवाद जारी रहेगा।

हालाँकि वादे आंशिक रूप से ही पूरे हो पाए परन्तु यह एक प्रतिमान बन गया। दक्षिण अफ्रीका की स्थानीय आयोजन समिति (एलओसी) ने अंततः संयुक्त स्टेडियम निरीक्षण में यूनियनों को शामिल किया, हालाँकि उन्होंने शुरू में जोर देकर कहा था कि उन्हें फीफा ने यूनियनों के साथ समझौते के बारे में पर्याप्त रूप से सूचित नहीं किया है, और स्विस् ट्रेड यूनियन के प्रतिनिधियों के विश्व संघठन पर दबाव डालने के बाद ही उन्होंने पूरी तरह से सहयोग करना शुरू किया। यह तो निश्चय ही है कि यूनियनों और फीफा के बीच हुआ समझौता एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही।

गोल ! 2009 की राष्ट्रीय हड़ताल

यह माना जा सकता है की जुलाई 2009 की राष्ट्रीय हड़ताल इस अभियान का महत्वपूर्ण बिंदु था। जब सॉकर सिटी में वर्ल्ड कप का फाइनल में केवल एक वर्ष का समय रहा गया था उसी समय पर पूरे देश में 70,000 निर्माण श्रमिकों ने एक साथ हड़ताल कर दी। ऐसा लगता था जैसे सब ठहर गया है और पश्चिमी मीडिया के कुछ हिस्सों में यह बहस भी शुरू हुई कि वर्ल्ड कप को दक्षिण अफ्रीका से हटा लेना चाहिए। हालांकि हड़ताल केवल एक सप्ताह चली लेकिन यह व्यापक तौर पर सफल रही। बीडब्ल्यूआई और उसके साथी संघ न केवल मजदूरी बढ़ने और बेहतर कामकाजी परिस्थितियों के लिए बातचीत करने में सफल रहे बल्कि उन्होंने निर्माण श्रमिकों के लिए 40,000 टिकट भी हांसिल किए, ताकि वे भी उस टूर्नामेंट का लुत्फ उठा सकें जिसे उन्होंने ही संभव बनाया।

वर्ल्ड कप के लिए निर्माण के दौरान दुर्भाग्यवश दो श्रमिकों की मृत्यु हो गयी परन्तु यह संभव है कि यदि यूनियनों ने कार्यस्थल पर सुरक्षा को बेहतर करने के लिए निरंतर प्रयास नहीं किये होते तो यह संख्या अधिक भी हो सकती थी। बी.डब्ल्यूआई. के अभियान ने निर्माण श्रमिकों के मुद्दों

को दक्षिण अफ्रीका के करदाताओं, जिन्होंने बड़े पैमाने पर टूर्नामेंट का वित्तपोषण किया था और लाखों दर्शक जिन्होंने वर्ल्ड कप देखा था, सहित व्यापक समाज में सामूहिक चेतना बढ़ाने में भी अपना योगदान दिया।

केवल खेल के संदर्भ में देखे तो फीफा विश्व कप-2010 बहुत सफल आयोजन नहीं था। गिने-चुने मैच ही यादगार थे। यदि निर्दयी डच टीम ने फाइनल में बेहतर स्पेनियों को हरा दिया होता था, तो इस टूर्नामेंट को एक आपदा ही माना जाता। हिंसा और अपराध के बारे में कोई भी कयास सच नहीं हुआ और अक्सर खराब गुणवत्ता के खेल के बावजूद आये हुए दर्शकों में से बहुसंख्य दक्षिण अफ्रीका में मजा लेते हुए ही दिखाई दिये। यह सही है कि फीफा और भी बेहतर हो सकता था।

संगठन के तौर पर बीडब्ल्यूआई ने निर्माण श्रमिकों के अधिकारों को हासिल करने और खेलों से सम्बंधित निर्माण के क्षेत्र में स्वास्थ्य और सुरक्षा मानकों को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, और भविष्य में आगामी

मेगा-खेल-आयोजनों के संबंध में इन मुद्दों को बढ़ावा देने के लिए एक फ्रेमवर्क भी विकसित किया।

यूरो 2012 : सम्मान पूर्वक कार्य के लिए अभियान (डिसेंट वर्क कैपेन)

जब यूनिन ऑफ यूरोपीय फुटबाल एसोसिएशन (यूईएफए) दोनों स्टेडियमों के निर्माण और सामान्य बुनियादी ढांचे के काम की प्रगति को असंतोषजनक मान रहा था और यूक्रेनियन को टूर्नामेंट के लिए मेजबानी के अधिकारों के खोने का डर था उस समय पोलैंड और यूक्रेन के बिल्डिंग वर्कर्स यूनिन ने 2009 के शुरुआती समय में एक संयुक्त व्यापक डिसेंट वर्क अभियान शुरू किया।

बीडब्ल्यूआई के अभियान का मुख्य लक्ष्य संगठित करना, सामूहिक सौदेबाजी और कामगारों के अधिकारों के संरक्षण से यूरो 2012 के निर्माण स्थलों पर सम्मान पूर्वक कार्य (डिसेंट वर्क) को बढ़ावा देना था। जन सामान्य के बीच सूचनाओं के प्रसार के महत्व को ध्यान में रखते हुए



मीडिया स्ट्रेटेजी को अभियान के प्रयासों का अभिन्न अंग बनाया गया ।

बीडब्ल्यूआई और इसके यूक्रेन और पोलैंड के सहयोगियों ने नियोक्ताओं, राष्ट्रीय सरकारों और यूईएफए के साथ संवाद स्थापित करने और बनाए रखने के प्रयास किये । हालांकि यूरोपियन कार्य समिति ने इसमें कोई रुचि नहीं दिखाई । दक्षिण अफ्रीका विश्व कप के लिए निर्माण के दौरान फीफा की तरह उनकी भी मुख्य चिंता, एक सफल टूर्नामेंट के लिए मेजबान देशों की क्षमता, और विशेष रूप से, विभिन्न निर्माण स्थलों की स्थिति और उनका विकास थी । दूसरे शब्दों में , निर्माण श्रमिक यूरो-2012 की संभावित सफलता के लिए आवश्यक तो थे, लेकिन उन भागीदारों के रूप में नहीं जो उचित व्यवहार के योग्य थे ।

यूईएफए ने डिसेंबर 2006 अभियान की चिंताओं को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया, स्थानीय आयोजन समिति और यूक्रेनी फुटबॉल महासंघ दोनों ने इस पर मुकदमा दायर कर दिया, जिससे कई कठिनाइयां आईं। हालांकि,

2010 में एक समझौता हुआ जिससे कामगारों की मजदूरी में काफी सुधार हुआ और अभियान के पर्यवेक्षकों की यूरो 2012 के प्रत्येक निर्माण स्थल तक पहुंच सुनिश्चित हुई । मेगा खेल आयोजनों की परिपाटी की तरह यूरो 2012 के निर्माण प्रयासों में भी 400 से अधिक सब-कॉन्ट्रैक्टर्स शामिल थे । जाहिर तौर पर काम और रहने की स्थितियों में व्यापक भिन्नता थी । स्वास्थ्य और सुरक्षा नियमों के उल्लंघन के 5000 से अधिक दर्ज किए गए, 14 घातक दुर्घटनाएं हुई और उनमें से ज्यादातर मामले गैर-संघीय सब-कॉन्ट्रैक्टर्स के यहां से पंजीकृत हुये थे ।

आवास और पर्याप्त स्थानीय परिवहन की कमी और मीडिया के कुछ हिस्सों में व्यक्त की गयी हिंसा की आशंका के बावजूद यूरो 2012, शांतिपूर्ण तरीके से आयोजित हो गए और खेल के संदर्भ में यह एक सफल टूर्नामेंट रहा । हालांकि, यूईएफए के अहंकार और असहज भावनाओं ने उन सभी लोगों आहत किया जिन्होंने इस आयोजन को संभव बना दिया और यूरोपियन कार्य समिति को एक प्रतीकात्मक लाल कार्ड मिल गया । ●



ब्राज़ील में डिसेंट वर्क अभियान

अगर खेल के संदर्भ में बात की जाए तो संभवतः ब्राज़ील की मिथकीय स्थिति की तुलना किसी और देश नहीं की जा सकती है।

2012 में यूरोप में हुए मेगा स्पोर्ट्स इवेंट्स के बाद यह माना ही जा रहा था कि 2014 विश्व कप और 2016 के ओलंपिक का मेजवान देश ब्राज़ील ही होगा और असीम क्षमता वाले देश ब्राज़ील को लम्बे समय से विश्व स्तर पर उभारने की मांग भी की जा रही थी।

अपनी अद्वैत सुन्दरता, विशाल प्राकृतिक संस्थाधन और मानव उपलब्धियों के साथ साथ ब्राज़ीलियाई समाज भ्रष्टाचार और राजनैतिक घोटालों से भी प्रभावित रहा है। यह दोनों ही विशेषताएँ आगामी मेगा स्पोर्ट्स इवेंट की तैयारी के दौरान सामने आने की संभावना भी थी।

2014 में और उसके आगे भी सम्मानजनक काम (डिसेंट वर्क) के लिए अभियान

2014 और इसके आगे भी डिसेंट वर्क के लिए अभियान, 2011 के शरद ऋतु के शुरुआती दिनों में शुरू हुआ, जब बीडव्लूआई के साथ काम करने वाले स्थानीय ट्रेड यूनियनों ने मक्रेना जो इतिहास में ऐसा दूसरा (मक्सिको सिटी में अजेंता के बाद) स्टेडियम होगा जहाँ दो बार फ़ाइनल मैच खेला गया के मुख्य प्रवेशद्वार, जिसका पुनर्निर्माण वर्ल्ड कप के लिए हो रहा था, के सामने एक प्रदर्शन करते किया। इसके बाद कई स्थानीय और राष्ट्रीय पहल की गईं जिनसे निर्माण श्रमिकों के लिए महत्वपूर्ण सुधार किये गए।

अकेले 2011 में ब्राज़ील में विभिन्न निर्माण स्थलों पर हड़ताल और लामबंदी हुई जिससे बहुत महत्वपूर्ण परिणाम जैसे सुरक्षितकार्य स्थितियाँ, बेहतर मजदूरी, नियमित अवकाश विशेषकर उन श्रमिकों के लिए महत्वपूर्ण थे जो घर से दूर साइट पर काम करते थे जिन्हें शायद ही कभी परिवार से मिलने का अवसर मिल पाता था और बोनस आदि हांसिल हुए। संघर्षरत मजदूरों को विश्व भर से सहयोग और समर्थन सन्देश मिलने में बढोतरी हो गयी और इस तरह की एकजुटता ने बीडव्लूआई और सहयोगी अभियानकर्ताओं की प्रोफाइल को और बेहतर बना दिया।



2014 में जब ब्राजील को विश्व कप की मेजबानी दी गयी थी तब वह सबसे बेहतर उम्मीदवार था क्योंकि तब केवल वही एक ही था जो फीफा की तत्कालीन महाद्वीपीय आवर्तन (रोटेशन) की नीति के अनुरूप था। वैसे तो तैयारियों में ढिलाई थी पर कोई विकल्प भी नहीं था, उसी समय 2011 में बीडब्लूआई ने अभियान शुरू किया जिसके चलते पर्यवेक्षकों ने स्टेडियम और अन्य संरचनाओं के समय से पूरा होने पर संदेह भी व्यक्त करना शुरू किया। इस तरह के अनुमान किसी भी मेगा स्पोर्ट्स इवेंट्स से पहले सामान्य ही हैं मगर इस बार यह चिंता कुछ तक सही भी लग रही थी। उदाहरण के लिए, ब्राजील ने यह तय करने में कि किस शहर को विश्व कप का मेजवान होने का सम्मान दिया जाये बहुत समय बर्बाद कर दिया था। यह काफी हद तक ब्राजील फुटबल एसोसिएशन (सीबीएफ़) के अध्यक्ष और पूर्व फीफा अध्यक्ष जोआओ हेवेलिंग के पूर्व दामाद रिकार्डो तिकिसरा के प्रभाव के कारण

आरोपों के आलावा असहमत पत्रकार ब्लादिमीर हूगोज को 1975 में प्रताड़ित करने और हत्या का आरोप भी था।

2014 के विश्व कप की तैयारी के आसपास अराजकता का माहौल था। मई 2012 के अंत तक यानी टूर्नामेंट के शुरू होने के केवल दो साल पहले मीडिया ने यह अनुमान लगाया कि विश्व कप से सम्बंधित सभी निर्माण परियोजना का 41 प्रतिशत भाग शुरू भी नहीं हो पाया था। जबकि ब्राजील की जनता 5 साल पूर्व से ही जानती थी कि वह टूर्नामेंट की मेजबानी करेगा।

बीडब्लूआई और उससे सम्बद्ध घटकों के पास बहुत कम विकल्प थे फिर भी वे तैयार थे। विलम्ब, भ्रष्टाचार के कांड और कुल भ्रम की स्थिति ने निर्माण क्षेत्र में अधिक काम और कम मजदूरी में काम करने वाले मजदूरों में तनाव को बढ़ा दिया हालाँकि इन कारकों ने शायद ट्रेड



था। तिकिसरा की आधार शक्ति क्षेत्रीय महासंघ थे जो कि सीबीएफ़ बनाते हैं और उनका समर्थन बनाये रखना जरूरी था।

अंततः विश्व कप के आयोजन क्षेत्र का विस्तार सभी संभावित जगहों पर हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्टेडियमों का निर्माण फुटबल के गैर पारम्परिक शहरों जैसे ब्रासिलिया, क्युयेबा, मनौस और नताल में किया गया जिनमें से कोई भी पेशेवर क्लब या ब्राजील के प्रमुख डिवीजन सीरिया ए के पास नहीं था। तिकिसरा और उनके साथियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप इतने अधिक और गंभीर थे की उन्हें अंततः "स्वास्थ्यकारणों" से 2013 में सीबीएफ़ के अध्यक्ष पद को छोड़ना पड़ा।

तिकिसरा के स्थान पर एक और विवादस्पद व्यक्ति जोस मारिया मरीन आये, जो कि एक सैन्य नेता के समय सोपोलओ में राज्य स्तर के पूर्व नेता थे जिन पर अन्य

यूनियनों में मजदूरी के बारे में बात करने की ताकत को बढ़ा दिया। असंतोष बढ़ने के साथ कार्य पूरा करने की इच्छा भी थी जिसका मायने था कि ठेकेदारों और उप ठेकेदारों और खेल आयोजकों को अभियान की बात सुननी पड़ी।

यह संख्याओं में भी परिलक्षित होता है कि 2010 में ब्राजील में पांच ट्रेड यूनियन बीडब्लूआई से सम्बद्ध थे ये संख्या दो साल बाद पांच गुना हो गई थी। बीडब्लूआई ने संयोजक और प्रेरक शक्ति के रूप में इन यूनियनों के साथ मिलकर कई स्थानीय और राष्ट्रीय गतिविधियों के साथ साथ एक घोषणा पत्र भी तैयार किया। पहली बार इस तरह की आम सहमती ब्राजील के निर्माण क्षेत्र के भीतर विकसित हुई थी। घोषणा पत्र ने एक सामूहिक राष्ट्रीय कार्य सूचि के लिए अगुवाई करने का काम किया, जिसके अंतर्गत सामूहिक सौदेबाजी के अधिकार, सबके लिए सामाजिक लाभ और सामान्य न्यूनतम मजदूरी की सयुक्त मांगें थी।

इसके अलावा बीडब्लूआई की अगुवाई में अभियान की कार्य प्रणाली ब्राजिलियाई ट्रेड यूनियनों के पारम्परिक तरीकों से भिन्न थी। अभियान की गतिविधियों को सामान्यतः मेजबान शहरों में स्थानीय यूनियन आयोजित करते थे, जिसमें अभियान में शामिल सभी संगठनों को आमंत्रित किया जाता था। उन्होंने निर्माण स्थलों का भ्रमण किया और सरकारी प्रतिनिधियों, स्थानीय आयोजकों, मीडियाकर्मियों तथा अन्य लोगों के साथ बैठके की। गतिविधियों की रिपोर्ट बीडब्लूआई की वेबसाइट पर प्रकाशित की गयी। इस पूरे काम में अन्य देशों मुख्यतः यूरोपीय देशों से भी ट्रेड यूनियन प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया।

आपसी विमर्श के जरिये परिणाम हांसिल करने के बीडब्लूआई और उसके सदस्य संगठनों के प्रयासों के बावजूद वर्ल्ड कप के लिए निर्माण के दौरान संघर्ष सामान्य

तौर पर होते रहे। वर्ल्ड कप से सम्बन्धित निर्माण कार्यों में वर्ष 2011 से 2014 के दौरान 28 हड़तालें हुईं, जिनमें से अधिकांश बीडब्लूआई के अभियान के शुरुआती दो वर्षों के दौरान आयोजित हुई थी। व्यापक तौर पर फैला हुआ भ्रष्टाचार, पारदर्शिता की कमी जैसी बाधाओं के बावजूद अभियान के प्रमुख लक्ष्य हांसिल हुये और मेगा खेल आयोजनों में निर्माण श्रमिकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर व्यापक कवरेज भी मिला।

2013 में ग्रीष्म ऋतु में जब ब्राजील कन्फेडरेशन कप की मेजबानी करने वाला था, देश के प्रमुख शहरों में दंगे शुरू हो गए। हालांकि इन दंगों और विरोध का कारण सीधे तौर पर खेल से जुड़ा हुआ नहीं था वास्तव में वे विश्व कप के लिए होने वाली रिहर्सल के समय पर हुए थे और कई परिवेक्षक इसे खेल से जुड़ा हुआ मान रहे थे। कभी कभी ब्राजील को "असमानताओं का वर्ल्ड चैंपियन" की



तरह भी माना जाता है। हताशा की स्थिति में लोगों ने बस का किराया तक देना बंद कर दिया, कईयों ने कहना भी शुरू किया कि करोड़ों की लागत से नये विश्व स्तरिय फुटबल स्टेडियम बनाने का औचित्य ही क्या है जबकि इनमें से कई तो बहुत कम समय के लिए उपयोग में आ पायेंगे।

तनाब बहुत ज्यादा था और कुछ लोगों का कहना था कि वर्ल्ड कप के पहले पूरे देश में अराजकता फैल जाएगी, हालाँकि आयोजन शांतिपूर्ण रहा। हकीकत में केवल धनी ब्राजीलियाई ही उस स्टेडियम के अंदर पैर रख सकते थे जिसे अकूत सार्वजनिक व्यय से निर्मित या पुनःनिर्मित किया गया था और सेमी फाइनल में जर्मनी के खिलाफ घरेलू टीम के निराशाजनक प्रदर्शन के बावजूद भी टूर्नामेंट को आम तौर पर सफल माना गया।

2014 विश्व कप से 2016 ग्रीष्म ओलम्पिक

इससे पहले कि वर्ल्ड कप खत्म होकर रूस की यात्रा शुरू कर पाता, ब्राजीलियाई लोगों ने अपना ध्यान रियो ओलम्पिक पर केन्द्रित किया, जिसकी मेजबानी अक्टूबर 2009 में तय की गयी थी। अपने मूल रूप में रियो 2016 के अभियान में यह रेखांकित किया गया था कि खेल की मेजबानी करने का मुख्य उद्देश्य रियो की जनेरियों को प्रोत्साहन देना था, और साथ ही साथ पर्यटकों और निवेश को आकर्षित करने के लिए ब्राजील को "आर्थिक और राजनैतिक स्थिरता" वाले देश की तरह प्रस्तुत भी करना था।

मेगा स्पोर्ट्स इवेंट की मेजबानी के पक्ष में एक महत्वपूर्ण तर्क दिया जाता है कि वे परिवर्तन का कारक होते हैं। प्रायः व्यवहार में आर्थिक तरक्की और लाभ कुछ लोगों तक ही सीमित रह जाता है। रियो के मामले में शुरुआत से यह स्वीकार किया था कि खेल मेगा स्पोर्ट्स इवेंट्स की मेजबानी के लिए प्राथमिक प्रेरक कारण नहीं था। इसे सनक कहे या इमानदारी बरहाल रियो के आगामी ओलंपिक की मेजबानी और ज्यादातर अन्य ओलंपिक्स और वर्ल्ड कप के मेजबानों के इरादे तो पता चल ही चुके हैं।

2016 ग्रीष्मकालीन ओलंपिक्स के लिए बीडवूआई का अभियान 2014 के विश्व कप के अनुभव पर आधारित था। 2014 के अभियान का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी था कि स्टेडियम और परियोजना की संरचनाओं के पूर्ण होने की समय सीमा आते-आते दुर्घटनाओं विशेषकर घातक दुर्घटनाओं में नाटकीय बढ़ोतरी हुई थी। सुरक्षा और सामान्य कार्य करने की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए बीडवूआई ने ब्राजीलियाई श्रम मंत्रालय के अनुसंधान संस्थान फुन्डेसन्ट्रो (FUNDECENTRO) के साथ एक सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किये। इस समझौते के अंतर्गत विश्व कप से सम्बंधित निर्माण परियोजनाओं में होने वाली घातक दुर्घटनाओं पर एक अध्ययन किया गया जिसके आधार पर एक व्यावसायिक सुरक्षा प्रोटोकॉल और संयुक्त कार्य की योजना बनाई गयी थी।

रियो ओलंपिक के लिए तैयारी के दौरान श्रमिकों की स्थिति में सुधार लाने के प्रयास में, अभियान को ब्राजील के कई सामाजिक मुद्दों के साथ संघर्ष करना पड़ा, जिसमें निरंतर नागरिक अशांति, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में नकारात्मक विकास और राजनीतिक उथल-पुथल शामिल थे।



बहरहाल, बीडवूआई और उसके सहयोगियों ने ब्राजील और विदेशों में यूनियनों और अभियानकर्ताओं के लिए बैठकें और सम्मेलनों सहित कई गतिविधियों को सफलतापूर्वक आयोजित किया। इसके अलावा खेल आयोजनों में निर्माण श्रमिकों की सामाजिक और मिडिया प्रोफाइल बेहतर हुई तथा मोलभाव करने की स्थिति में भी महत्वपूर्ण सुधार हुए।



अभियान के दौरान बीडव्लूआई ने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कई रणनीतियों को एक साथ क्रियान्वित किया | इसके तहत रिओ 2016 की आयोजन समिति और फारेस्ट एंड स्टुवर्डशिप काउंसिल (एफएससी) के मध्य एक समझौता किया गया जिसमें यह सुनिश्चित किया गया था कि ओलम्पिक के लिए किये जा रहे निर्माण स्थलों

पर केवल प्रमाणित लकड़ी के उत्पादों को ही खरीदा और इस्तेमाल किया जाएगा | जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र की यूनियनों को मजबूती मिली और उन्हें उन मजदूरों की स्थिति में सुधार करने का मौका भी मिला जिनका वे प्रतिनिधित्व करते थे | बीडव्लूआई ने पिछले अभियानों की तरह मिडिया गतिविधियों जैसे बेबसाइट, फेसबुक



ओलम्पिक निर्माण स्थलों पर सुरक्षित कार्य परिस्थितियों के लिए बीडव्लूआई के साथ मिलकर कार्य योजना तैयार करेगी।

इन रणनीतियों से बीडव्लूआई ब्राजील ओलम्पिक अभियान में कई महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रही।

निर्माण कार्य जब अपने शीर्ष पर था उस समय बीडव्लूआई के सम्बद्ध संघों ने 50 हजार श्रमिकों को संगठित किया। वे 27 हड़तालों में शामिल थे। इसके अतिरिक्त रिओ डी जनेरियो राज्य के तीन नए ट्रेड यूनियन बीडव्लूआई के साथ शामिल हुए। सामूहिक सौदेबाजी से अभियान के दौरान मजदूरी में औसतन 33 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। रिओ 2016 की आयोजन समिति ने आंशिक रूप से अभियान के ओएचएस प्रोटोकॉल को भी अपनाया।



इस अभियान ने खेलों के लिए निर्माण स्थलों पर डिसेंट वर्क की आवश्यकता के लिए जागरूकता को न केवल अपने स्वयं के चेनलों और ट्रेड यूनियनों के प्रेस माध्यम से बल्कि ब्राजील के मुख्यधारा मिडिया जैसे बेहद ताकतवर "ओ ग्लोबो" और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जानेमाने "गार्जियन" (यू.के.) जैसे माध्यमों से भी बढ़ाया गया। जून 2016 के अंत में बीडव्लूआई ने रिओ ओलंपिक में निर्माण के दौरान दुर्घटनाओं में मृतक श्रमिकों को वृक्षा रोपण और स्मारक के अनावरण के साथ श्रधांजलि अर्पित करते हुए इस अभियान का समापन किया।

राजनैतिक अशांति के बावजूद रिओ ओलंपिक को सफल माना गया, हालाँकि कई अन्तर्राष्ट्रीय

खेल समीक्षकों के अनुसार यह कार्यक्रम बहुत बड़ा हो गया था। आईओसी के अनुसार खेल की मेजवानी का कारण और प्रभाव दोनों ब्राजील के 7 एटलियों के स्वर्ण पदक जीतने पर परिलक्षित हो गया इन पदकों की संख्या किसी भी राष्ट्र को पहले किसी और ओलंपिक टूर्नामेंट में हासिल हुए पदकों से ज्यादा थी।

और नियमित प्रेस विज्ञप्ति को भी अपनाया गया।

बेहतर कार्य स्थितियों (डिसेंट वर्किंग कंडीशन) को सुनिश्चित करने के लिए व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रोटोकॉल विकसित किया गया। ओलंपिक की तैयारी में सम्मिलित प्रत्येक संविदाकारी कंपनी से इन मानकों का पालन अपेक्षित था। इसमें यह भी अपेक्षित था कि मुख्य कांटेक्टर यह भी सुनिश्चित करेंगे कि सब-कांटेक्टर भी उन्हीं मानकों का पालन करेंगे और श्रमिकों के लिए उसी तरह की कार्य स्थितियों, अधिकार और लाभ देंगे जो मुख्य कांटेक्टर देते आ रहे हैं; कंपनियां श्रम कानून का पूरी तरह पालन करेंगी और निर्माण कार्यों की शुरुआत से पहले श्रमिकों को नई तकनीक, विधियों, सामग्रियों और प्रक्रिया में प्रशिक्षित किया जाएगा।

FUNDACENTRO के साथ यह समझौता किया गया था की सरकारी निकाय 2014 के वर्ल्ड कप की तैयारी के दौरान हुई घातक दुर्घटनाओं पर अध्ययन करवाएगी और



खेल के आयोजन की समाप्ति के साथ ही रिओ शहर एक जटिल विरासत के रूप में छोड़ दिया गया था। खेलों के लिए बनाई गई विशाल इमारतों को संभाल कर रखने की जिम्मेदारी थी जिनमें से बहुत सी इमारतें खेल की समाप्ति के साथ ही अनावश्यक हो गयी थी। आर्थिक और अन्य वजहों से इनका रख-रखाव असम्भव हो गया था। अंततः ओलम्पिक समारोह की समाप्ति के 15 महीने बाद ही ऐसे कई खेलक्षेत्र (एरीना) खराब होने लगे जिनको समय से पूरा करने में निर्माण श्रमिकों ने अपनी जान तक दे दी थी। ●

महत्वपूर्ण कदम

भविष्य के मेगा स्पोर्ट्स इवेंट्स के लिए

आने वाले समय में बीडव्लूआई के चार मेगा स्पोर्ट्स अभियान क्रमशः शीतकालीन ओलंपिक प्योंगचेंग-2018, फीफा वर्ल्ड कप रूस-2018, ग्रीष्मकालीन ओलंपिक टोक्यो-2020, और फीफा वर्ल्ड कप कतर-2022, सक्रिय हैं।

चार में से तीन देशों में मेगा स्पोर्ट्स इवेंट्स पहले भी हो चुके हैं। यह जरूर है कि कुछ आयोजन उतने “मेगा” नहीं थे जितने अब होते हैं। 2002 के फीफा वर्ल्ड कप की मेजबानी जापान और दक्षिण कोरिया ने संयुक्त रूप से की थी, टोक्यो और सीओल क्रमशः 1972 और 1988 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक की मेजबानी कर चुके थे और इसके अलावा जापान दो बार पहले भी शीतकालीन ओलंपिक (सपोरो 1972 और नागानो 1998) की मेजबानी कर चुका था, रूस ग्रीष्मकालीन ओलंपिक (मास्को 1980) और शीतकालीन ओलंपिक (सोची 2014) दोनों की मेजबानी कर चुका था। दोनों खेल काफी विवाद में रहे थे इसका कारण रूस में रही खेल परम्परा की कमी और मेजबानी की क्षमता में अभाव न होकर खेल के दौरान पड़ोसी देशों में उनकी सैन्य गतिविधियाँ थीं।

दूसरी तरफ कतर ने कभी भी ऐसे खेल आयोजन की मेजबानी नहीं की थी जिसकी तुलना विश्व कप से की जा सकती हो। कतर, अली थानी परिवार से संचालित एक छोटा मगर धनी देश है। यहाँ की अधिकांश आबादी प्रवासी श्रमिक हैं ये चाहें घरेलू नौकर, निर्माण क्षेत्र या अन्य क्षेत्रों में कार्यरत हों, परन्तु अक्सर इनके आवास की खराब परिस्थितियाँ, कार्य स्थल में अच्छे स्वास्थ्य और सुरक्षा



ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक पर ध्यान

जुलाई और अगस्त 2020 में टोक्यो ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक की मेजबानी करेगा और साथ ही एथेंस, पेरिस, लन्दन और लोसेंजलिस जैसे प्रतिष्ठित शहरों की सूची में शामिल हो जायेगा जहाँ दो बार इनका आयोजन किया गया | मेजबान देश पहले से ही मौजूद कई खेलक्षेत्र के उपयोग की योजना बना रहा है जोकि आधुनिक ओलम्पिक के लिए असामान्य है।

अन्य मेजबान देशों की तुलना में जापान अनुकूल आर्थिक और राजनैतिक परिस्थितियों का लाभ ले सकता है और मेगा खेल आयोजन की तैयारी के समय आने वाले कई मुद्दों से बेहतर तरीके से निपट सकता है | हालाँकि यह जरूरी है कि इन सभी तरह के प्रयासों पर नज़र रखी जाए | जापान में अपने सहयोगी संगठनों के साथ मिलकर बीडव्लूआई अपने पूर्व अर्जित अनुभव और रणनीतियों के आधार पर खेल से सम्बंधित निर्माण के लिए अभियान की तैयारी कर रहा है |

लॉस एंजिल्स और पेरिस में भविष्य के ओलंपिक खेलों के लिए सम्बन्धित ट्रेड यूनियन आन्दोलनों ने स्थानीय समितियों संपर्क किया है और दोनों ही मामलों में प्रतिनिधियों का कहना है कि खेलों के लिए किये जाने वाले निर्माण और उनके अन्य पहलुओं पर श्रमिकों एवं अन्य लोगों के मानवाधिकार का सम्मान आवश्यक रूप से किया जाना चाहिए |

की कमी, कम मजदूरी और रोजगार प्रणाली इन्हें मूल मानव अधिकारों से बंचित या प्रतिबंधित करती है |

कतर के चयन के बारे में बहुत कम पारदर्शिता थी, पूरी सच्चाई से पर्दा तो अभी तक नहीं हटा है और चयन के 7 साल बाद भी यह प्रश्न अभी भी है कि वर्ल्ड कप के लिए कतर का चयन क्यों और कैसे हुआ |

कतर और रूस दो ऐसे वर्ल्ड कप आयोजन हैं जिन्हें अब तक सबसे ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय प्रचार मिल रहा है | रूस और कतर दोनों देशों में श्रमिकों की दास के समान स्थिति के खुलासे ने पूरे विश्व के लिए सदमे और निराशा की स्थिति उत्पन्न की है, जिसके चलते अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से कार्यवाही की मांग उठी है, फीफा से प्रतिबन्ध की मांग हो रही है; और कतर के लिए तो कुछ लोगों ने इसके मेजबानी के अधिकार को रद्द करने तक की मांग की है |

दक्षिण कोरिया में ट्रेड यूनियन का संघर्ष

जुलाई 2011 में आईओसी ने 2018 शीतकालीन ओलम्पिक की मेजबानी का अधिकार पिऑंगचेंग को दिया जोकि कोरिया में, लिलिहेमर(नार्वे 1994)के बाद ओलम्पिक की मेजबानी करने वालों में सबसे कम आबादी का शहर है | इस निर्णय का आशय यह भी है कि लगातार छठवी बार शीतकालीन ओलम्पिक का आयोजन उत्तरी और मध्य यूरोप के परम्परागत स्थानों से अलग स्थानों पर होगा | इससे यह भी जाहिर होता है कि आईओसी को शीतकालीन ओलम्पिक के लिए उपयुक्त मेजबान देश को ढूँढ पाने में लगातार मुश्किल हो रही है | उदाहरण के लिए ओस्लो, 2022 के गेम्स के लिए तैयार था मगर जब स्थानीय जनमत से उन्हें



यह पता चला कि अधिकांश जनसंख्या मेजबानी के लिए उत्सुक नहीं है तो उन्होंने इरादा बदल दिया | मूल रूप से यही बात 2026 के लिए इंसब्रुक (Innsbruck) और स्टॉकहोम (Stockholm) की संभावित उम्मीदवारी के साथ भी हुई, इसका मतलब यह हुआ कि सायन (स्विट्जरलैंड) ही मेजबानी करने वाला एक मात्र यूरोपियन उम्मीदवार रह गया है | वास्तव में आईओसी के लिये यह सोचने वाली बात है कि शीतकालीन ओलंपिक की मेजबानी की चाह रखने वाले देशों की अब उसमें रुचि नहीं है | उदाहरण के लिए शीतकालीन खेलों में कुछ विशेष प्रकार के खेल शामिल हैं, जो यदि ओलंपिक में शामिल नहीं किये जाते हैं तो संभवतः उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा जैसे, आर्थिक और अन्य कारणों से किसी भी देश में बॉक्सली प्रतियोगी अधिक नहीं है लेकिन फिर भी प्रत्येक शीतकालीन ओलंपिक मेजबान को बहुत ही महँगे बॉक्सली ट्रैक का निर्माण करना आवश्यक होता है जो कि खेल खत्म होने के बाद बेकार ही हो जाता है |



2018 में पियोंगचेंग पर अभियान शुरू होने तक बीडव्लूआई मेगा स्पोर्ट्स इवेंट्स की तैयारी के दौरान निर्माण श्रमिकों के मुद्दों पर काम करने के बारे में अनुभव और रणनीतिक विशेषज्ञता अर्जित कर चुका था। हालांकि प्रत्येक मेजवान देश की अपनी अलग आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताएँ होती हैं जिनका सामना अनिवार्य रूप से अभियानकर्ताओं को करना पड़ सकता है। दक्षिण कोरिया में मजदूरी का भुगतान नियमित न किया जाना हमेशा से ही एक प्रमुख मुद्दा रहा है। 2018 के शीतकालीन ओलम्पिक के निर्माण में विभिन्न सार्वजनिक और निजी निर्माण और बुनियादी संरचनाओं की परियोजना में लगभग 16 मिलियन डॉलर के निवेश की उम्मीद थी। बीडव्लूआई अन्वेक्षण दस्तावेज में बताया गया था कि विभिन्न



ठेकेदार और उप-ठेकेदारों पर बकाया मजदूरी की राशि 8 मिलियन से अधिक थी। दूसरे शब्दों में निर्माण श्रमिकों की सामूहिक बकाया राशि ओलम्पिक से जुड़े सभी बुनियादी सुविधाओं की परियोजनाओं के लिए अनुमानित राशि की 5 प्रतिशत के बराबर थी।

बीडव्लूआई ने अपने स्थानीय सहयोगी “कोरियन फेडरेशन ऑफ कंस्ट्रक्शन ट्रेड यूनियन” के साथ मिलकर आईओसी

पर इस विषय और अन्य मुद्दों पर दबाव डाला और मांग की कि सरकारी निकाय मजदूरों की बकाया राशि का भुगतान तत्काल करने में सहयोग करे, 2018 शीतकालीन ओलम्पिक से जुड़े सभी परियोजना स्थलों का तत्काल निरीक्षण हो, संयुक्त श्रम निरीक्षण किया जाये, और श्रमिकों के अधिकारों के उल्लंघन और शिकायतों को हल करने के लिए प्रभावी तंत्र स्थापित किया जाये। हालांकि कुछ सुधार होने के बावजूद भी 2018 के खेल सम्बन्धी निर्माण में अभी भी बहुत सी परेशानियाँ हैं।

निर्माण क्षेत्र में उप-ठेकेदारों को शामिल किया जाना एक सामान्य समस्या रही है। यहाँ तक की कि उप-ठेकेदार अन्य उप-ठेकेदारों को भी नियुक्त कर लेते हैं। अक्सर देखा गया है कि मुख्य ठेकेदार श्रमिकों के अधिकार और उनके शर्तों की जिम्मेदारी भी नहीं लेते हैं। दक्षिण कोरिया की यह आम समस्या रही है और यही समस्या पेयोंगचेग 2018 की परियोजना में श्रमिकों को भी थी। इस तरह की जिम्मेदारी के प्रति अनदेखी लोगों के जीवन पर भारी पड़ती है। दक्षिण कोरिया में ओलम्पिक से संबंधित निर्माण स्थलों पर कम से कम चार घातक दुर्घटनाएँ हो चुकी हैं। बीडव्लूआई लगातार इस बात पर जोर देता रहा है कि जहाँ तक सम्भव हो प्रत्यक्ष रोजगार देना पेयोंगचेग 2018 का अभिन्न अंग होना चाहिए।

पेयोंगचेग 2018 के निर्माण स्थलों पर हजारों प्रवासी श्रमिक रोजगाररत हैं। इन श्रमिकों में अधिकांश कोरियाई-चीनी हैं और बाकी मध्य और दक्षिण-पूर्व एशिया से आये श्रमिकों की भी संख्या काफी है। सांस्कृतिक और भाषीय दोनों मुद्दे और रोजगार से सम्बंधित कारकों जैसे वीजा की स्थिति के कारण यह श्रमिक विशेष रूप से शोषण के शिकार हो जाते हैं। बीडव्लूआई ने दक्षिण कोरिया में प्रवासी श्रमिकों की स्थिति में सुधार लाने के लिए ठोस प्रयास किये हैं ताकि वे चुनौतियों का सामना कर सकें।

कुछ महीने पहले ही पेयोंगचेग 2018 में बीडव्लूआई और उसके स्थानीय सहयोगियों ने कई महत्वपूर्ण उद्देश्यों को प्राप्त किया है और असहाय श्रमिकों की मजदूरी के विवादों





को सुलझाने में सफलता दिलवाई है। हालाँकि अभी भी बहुत से मुद्दे अनसुलझे ही हैं।

रूस: बीडब्ल्यूआई के स्पोर्ट्स अभियान में खेल परिवर्तक

रूस को 2018 विश्व कप के लिए मेजबान चुना जाना आश्चर्यचकित होने वाली घटना नहीं लगती थी। यह एक दिलचस्प निर्णय जरूर था, क्योंकि लोकतांत्रिक संरचनाओं के बावजूद रूस और फीफा दोनों में अभिशासन की एक समान समस्याएं हैं। वे परंपरागत रूप से छोटे समूहों से संचालित रहे हैं और पारदर्शिता और पहुंच के बारे में चिंता ने निर्माण की प्रक्रिया को प्रभावित कर दिया है।

यह शुरू से ही स्पष्ट था कि रूस 2018 निश्चय ही बीडब्ल्यूआई के लिए बहुत ही चुनौतिपूर्ण रहेगा। सौभाग्य से अब संगठन, अपने सभी पिछले अभियानों के माध्यम

से, मेगा-खेल-आयोजनों के संबंध में महत्वपूर्ण अनुभव और विशेषज्ञता अर्जित कर चुका है और इन अभियानों के माध्यम से प्राप्त सभी लक्ष्यों के कारण, संगठन का प्रोफाइल पहले से कहीं बेहतर हो चुका था। यदि बीडब्ल्यूआई अभियान जमीन पर स्थानीय श्रमिकों और यूनियनों के साथ मिलकर काम करता है, तो अपेक्षित परिणाम मिल सकते थे।

अगस्त 2016 में बीडब्ल्यूआई और इसके सहयोगी, रूसी बिल्डिंग वर्कर्स यूनियन (आरबीडब्ल्यूयू), फीफा और स्थानीय आयोजन समिति के मध्य समझौते पर सहमति एक महत्वपूर्ण सफलता रही। बेहतर कार्य स्थितियों पर समझ बढ़ाने और इन मुद्दों के प्रभावी निस्तारण के लिये सूचनाओं के आदान-प्रदान, कार्य स्थितियों की मॉनिटरिंग के लिये वर्ल्ड कप 2018 के निर्माण स्थलों के संयुक्त दौरों के लिये सहयोग, बेहतर कार्य स्थितियों से सम्बन्धित गम्भीर उल्लंघन की शिकायतों के निस्तारण

के लिये प्रक्रिया को सुगम बनाना और डिसेंट वर्क के लिये जागरूकता और क्षमता विकास कार्यक्रमों के आयोजन पर सहयोग, इस सहमति पत्र के मुख्य बिन्दु थे ।

बीडब्ल्यूआई और स्थानीय श्रम निरीक्षकों ने कई निरीक्षण किये । इन निरीक्षणों में खतरों के उल्लंघन और श्रमिकों के साथ आयोजित साक्षात्कार दर्ज किए गए । अदत्त पारिश्रमिक, बोनस, ओवरटाइम, उचित उपकरणों की कमी और खराब सुरक्षा जोन सहित सुरक्षा के मानकों में उल्लंघन को कामगारों ने दर्ज करवाया । गैर-पारदर्शी मजदूरी प्रणाली, जो अन्य बातों के अलावा, स्थानीय और प्रवासी श्रमिकों के बीच आय में अंतर का कारण भी है, को कार्रवाई के लिए मुख्य मुद्दे के रूप में पहचाना गया ।

विश्व कप 2018 के लिए तैयारी में स्टेडियम के निर्माण में प्रवासी श्रमिकों का मुद्दा 2017 के आरम्भ में अंतरराष्ट्रीय समाचार बन गया, जब यह पता चला कि कई उत्तरी कोरियाई मजदूर सेंट पीटर्सबर्ग में नये स्टेडियम निर्माण स्थल पर दास-समान स्थितियों में रहते हुए काम कर रहे थे और उनमें से कम से कम एक की मृत्यु हो गयी है । इसके सम्बन्ध में जो विवरण सामने आया वो भयावह था, विश्व कप 2018 के अधिकतर निर्माण स्थलों पर अधिकांश मजदूर प्रवासी थे, वे या तो पूर्व सोवियत संघ के देशों से थे या दक्षिण-पूर्व युरोप के कुछ हिस्सों से आये हुए थे और इन खतरनाक स्थितियों में फंस गए थे । इन श्रमिकों के अधिकारों के सम्मान, स्थानीय कामगारों के समान वेतन इनके साथ डिसेंट वर्क के सिद्धांतों अनुसार व्यवहार को सुनिश्चित करने के लिये बीडब्ल्यूआई ने विशेष प्रयास किये ।

यदि रूस के विश्व कप 2018 को कई लोगों द्वारा संदेह के साथ देखा जाता है, तो कतर 2022 के बारे में भी चिंताएं और अधिक हैं । यूएफए के पूर्व राष्ट्रपति मिशेल प्लाटिनी और उनके बदनाम सहयोगी जिनेडीन जिडेन से बार्सिलोना के नामी-गिरामी जावी और पेप गार्डियोला ने विभिन्न तरीकों से जिस आसानी से कतर को समर्थन दिया, शायद ही किसी वित्तीय प्रोत्साहन के बिना कोई ऐसा करने के लिए तैयार होता ।

कतर: खेल की विरासत के रूप में श्रम सुधार

कतर के मेजबानी के चयन और श्रमिकों के अधिकारों और स्थिति ने बहुत ध्यान आकर्षित किया । बहुत नकारात्मक प्रचार था । देश में प्रवासी श्रमिकों के अधिकारों और स्थिति पर ध्यान केन्द्रित किया गया ।

प्रवासी कामगारों का मुद्दा कुछ हद तक उन सभी मेगा खेल आयोजनों में रहा है जिनमें बीडब्ल्यूआई ने पिछले एक दशक में डिसेंट वर्क अभियान की शुरुआत से काम किया है । व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा और मजदूरों की समस्याएं समान समस्याएं हैं, लेकिन कतर के बारे में विशेष बात यह है कि व्यावहारिक रूप से हर कामगार प्रवासी है । “कफला” प्रणाली के तहत, कतर के रोजगार कानूनों के अंतर्गत, एक ‘प्रायोजक’ को प्रवासी श्रमिक जीवन के लगभग हर पहलू को नियंत्रित करने के अधिकार प्रदत्त हैं । संभवतः कतर पर सभी के ध्यान और बीडब्ल्यूआई के अभियान और जुड़ाव के कारण ही इस प्रणाली में बदलाव शुरू हो रहा है ।







बीडब्ल्यूआई और फीफा के मध्य सम्वाद तो चल रहा था परंतु फीफा इन मुद्दों के प्रति गंभीर नहीं था ऐसी स्थिति में बीडब्ल्यूआई ने फीफा को बहुराष्ट्रीय उद्यमों के लिए ओईसीडी दिशानिर्देशों का इस्तेमाल करते हुए स्विस् नेशनल कांटेक्ट प्वाइंट (एनसीपी) के साथ चुनौती प्रस्तुत की। बीडब्ल्यूआई ने एनसीपी से यह स्पष्ट करने के लिए कहा कि फीफा की जिम्मेदारी सभी प्रक्रियाओं और आपूर्ति श्रृंखला (वैल्यू चैन) के दौरान मानव अधिकारों के उल्लंघन से जुड़ी हुई है। भविष्य में बीडब्ल्यूआई के साथ बेहतर सहयोग लाने के लिए उन्हें अपने अच्छे कार्यालयों का इस्तेमाल करने के लिए कहा गया था। हालांकि प्रस्तुत केस कतर पर विशेष रूप से नहीं था, फिर भी अधिकांश उदाहरण इसी देश दिये गये थे। इस मामले से उत्पन्न चर्चा अभियान को आगे बढ़ाने में सहायक रही।

किए गए उपायों में संयुक्त राष्ट्र के व्यवसाय और मानवाधिकारों के संबंध में मार्गदर्शक सिद्धांतों (जिन्हें ओईसीडी में 2011 में बोर्ड पर लिया गया था और इसमें उन सिद्धांतों का उल्लेख था जिन्हें बीडब्ल्यूआई ने उद्धृत किया था) के लेखक प्रोफेसर जॉन रग्गी की नियुक्ति हुई। रग्गी रिपोर्ट, फीफा की कई क्षेत्रों में प्रगति का आधार बन गयी। बनाए गयी व्यवस्थाओं में से एक मानव अधिकार पर आठ सदस्यीय सलाहकार बोर्ड का गठन भी है जो

मानव श्रम के विभिन्न मुद्दों पर फीफा की कार्रवाई की जांच करता है, जिसमें निर्माण श्रमिकों के मानवाधिकार भी शामिल हैं। बीडब्ल्यूआई के महासचिव अंबेट यूसुसन भी बोर्ड के सदस्य हैं।

आईएलओ को कफला प्रणाली, जिसमें नौकरियों को बदलने या छोड़ने में अक्सर मुश्किल हैं, के मजबूर श्रमिकों के पहलुओं पर विचार करने के लिए एक जांच आयोग के गठन के लिए शिकायत प्राप्त हुई। ओईसीडी और आईएलओ दोनों प्रक्रियाएँ चर्चाओं के लिए वातावरण को बदलने में बहुत सहायक रही। कतर की सरकार के तीन साल के अन्दर आईएलओ मानवाधिकार श्रमिक मानकों के साथ पूरी तरह से अनुपालन के लिए जाहिर प्रतिबद्धता के आधार पर आईएलओ ने जांच करने के फैसले पर आगे न बढ़ने का फैसला किया। आईएलओ और कतर में उस तीन साल की अवधि के लिए एक तकनीकी सहयोग कार्यक्रम होने पर सहमति हुई।

इस मुद्दे पर तीन साल के दुर्गम काम के बाद नवंबर 2016 में, बीडब्ल्यूआई ने डिलिवरी और लेगेसी के लिए सुप्रीम कमेटी (एससी) के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किये। दोहा के दक्षिणी अल वाकर स्टेडियम में संयुक्त निरीक्षण फरवरी 2017 में शुरू हुआ। इस और इसके



बाद के विश्व कप से संबंधित अन्य निर्माण स्थलों के निरीक्षण में स्वास्थ्य और सुरक्षा के कई मुद्दे सामने आये, साथ ही एससी और विभिन्न ठेकेदारों दोनों में स्थितियों में सुधार के लिये वास्तविक प्रतिबद्धता भी दिखाई दी।

पिछले एक साल में एससी ने स्वीकार किया है कि विश्व कप के निर्माण स्थलों पर दो घातक दुर्घटनाएं हुई हैं: 29 वर्षीय अनिल कुमन पसमन की 16 अक्टूबर को अल वक्रा स्टेडियम में एक पानी के टैंकर ट्रक से मृत्यु और 16 अक्टूबर 2016 को 40 वर्षीय जैक कॉक्स की खलीफा स्टेडियम निर्माण स्थल पर गिरने कारण मृत्यु हो गयी। दोनों घटनाओं के बारे में बीडब्ल्यूआई को तुरंत सूचित किया गया और दुर्घटनाओं में जांच का विवरण भी दिया गया। इस स्तर का सख्खो पहले कभी नहीं था।

इसके अलावा, बीडब्ल्यूआई ने सर्वोच्च समिति के साथ हुए एमओयू के पूरक के तौर पर क्यूडीवीसी और फ्रांसीसी बहाराष्ट्रिय वीआईएनसीआई को कतर में इस परिधि में लाने के किये अनुबन्ध किया, इसमें इन कंपनियों के कतर में खेलों से संबंधित परियोजनाओं सहित अन्य परियोजनायें भी शामिल हैं। इसमें व्यावसायिक

स्वास्थ्य और सुरक्षा और कार्यकर्ता शिकायतों, सभी उप-ठेकेदारों और आपूर्तिकर्ताओं को भी परिधि में लाया जाएगा।

कतर 2022 में अभी 5 वर्षों का समय है। इसका मायने यह भी है कि, यदि प्रगति जारी रहती है तो कतर में निर्माण श्रमिकों के अधिकार और स्थिति में उल्लेखनीय सुधार संभावित हैं। बीडब्ल्यूआई कतर में संयुक्त रूप से संबोधित होने वाले मुद्दों पर अधिकारियों के साथ निरंतर सहयोग बनाये हुए है।

सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिये कई मेगा खेल आयोजनों में सीमित समय के लिए व्यापक निर्माण किये जाते हैं। कुछ मायनों में कतर बहुत चौनोतीपूर्ण है, और 2022 विश्व कप की मेजबानी से पहले देश में डेवलपमेंट प्लान के अंतर्गत कई व्यापक निर्माण कार्यक्रम शुरू किये गये गये हैं। आने वाली पीढ़ियों के लिए निर्माण क्षेत्र एक प्रमुख इंडस्ट्री होने की उम्मीद है। एक बेहतर इंडस्ट्री, अच्छी स्थितियों में श्रमिकों के अधिकारों के पूर्ण सम्मान के साथ, उच्च गुणवत्ता वाले निर्माण कर सकती है और देश की स्थिरता और प्रवासी निर्माण श्रमिकों के बेहतर भविष्य के लिये प्रमुख दीर्घकालिक योगदान दे सकती है।



भविष्य के लिए डिसेंट वर्क अभियान

खेल पर बीडब्ल्यूआई का अभियान बहुत से अभियानों से अलग है। यह एक लंबी अवधि की प्रक्रिया है जिसमें रणनीतियों को विकसित और क्रियाविधित किया जाता है, अनुभव से सीखा जाता है, और जिसमें बीडब्ल्यूआई ने बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढाला है और अवसरों का श्रमिकों के पक्ष में लाभ उठाया है। विविध संस्कृतियों और राजनैतिक संरचनाओं में बीडब्ल्यूआई को स्थानीय सम्बन्ध घटकों के सहयोग से चारों महाद्वीपों में लाखों कामगारों के कार्य और रहने की स्थितियों में बेहतरी के साथ खेलों में निर्माण श्रमिकों के अधिकारों के सवाल को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर लाने में सफलता प्राप्त हुई है।

ऐसे संकेत हैं कि विश्व के प्रमुख खेल संस्थान इस मुद्दे को गंभीरता से ले रहे हैं। महासचिव अंबेड यूएसएन के अनुसार बीडब्ल्यूआई आईओसी और फीफा में महत्वपूर्ण प्रगति देख रही है। परन्तु यह समस्याओं का अंत नहीं है, बल्कि बीडब्ल्यूआई पर और ज़िम्मेदारी है और

इसका मतलब यह भी है कि हालांकि यह प्रगति बनी तो अभियानों पर ही है परन्तु अब अकेले अभियानों पर निर्भर नहीं है।

बीडब्ल्यूआई ने डिसेंट वर्क अभियान की शुरुआत से जिन देशों में काम किया है उन सभी की सामाजिक और राजनैतिक सूचनाओं के आधार पर निकले मुद्दे बताते हैं कि खेल और श्रमिकों के मानवाधिकारों के लिए संघर्ष सामाजिक न्याय, अधिकार, जनतंत्र और मानवीय गरिमा के लिए व्यापक संघर्ष का ही हिस्सा है।

मेगा-स्पोर्ट्स इवेंट की तैयार करने वाले निर्माण श्रमिकों के अधिकारों और स्थितियों में जो बेहतरी हुई है वह उन अन्य निर्माण श्रमिकों के अधिकारों और स्थितियों में बदलाव का समर्थन करेगी जो वर्ल्ड कप और ओलंपिक खेलों के निर्माण की तरह सुर्खियों में नहीं रहे हैं। उनके अधिकार भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं और उनके मानव अधिकारों के लिए भी बीडब्ल्यूआई संघर्ष निरंतर जारी रहेगा। ●

WITHOUT US NO FOOTBALL IN QATAR IN 2022



BWI Mega Sports Briefing

Trade union rights in the Tokyo 2020 supply chain

On 14 July, the Tokyo Olympic Committee (TOCO) and the Japanese Olympic Committee (JOOC) announced a new framework agreement for the Tokyo 2020 Olympic and Paralympic Games. This agreement covers the supply chain of the Tokyo 2020 Olympic and Paralympic Games, including the construction of the new National Stadium for Tokyo 2020. The agreement covers the supply chain of the Tokyo 2020 Olympic and Paralympic Games, including the construction of the new National Stadium for Tokyo 2020. The agreement covers the supply chain of the Tokyo 2020 Olympic and Paralympic Games, including the construction of the new National Stadium for Tokyo 2020.

Summary

- Considering Japan's weak labour rights framework on legal labour rights, the TOCO has already expressed concern regarding the weak labour standards set in the Tokyo 2020 Sustainable Sourcing Guide for Tokyo, which may be handy on creating conflict resolution mechanisms.
- TOCO has also made suggestions regarding the proposed framework. Moreover, we are particularly concerned that there is no intention to submit the proposed mechanism to public consultation, and that there are plans to withdraw out the operation of the mechanism.
- A ILO affiliated union (ITF) has made credible allegations of workers' rights violations regarding a German-based timber company (Eberl) that is supplying timber for the construction of the new National Stadium for Tokyo 2020. Certification audits have proved insufficient to have the matter resolved, however the fact that other alleged labour violations with Eberl have recently come to light means there is ongoing cause for concern.

Supply chain monitoring

The Tokyo 2020 Summer Olympic and Paralympic Games will require the construction or refurbishment of over 60 Olympic sporting facilities, as well as staff or infrastructure, accommodation and other related projects. Many of these currently have not been awarded, including the new National Stadium for Tokyo 2020, which was won by the Eberl Group, one of Japan's most established

construction companies that has built the National Stadium for the Tokyo 2020 Olympic on the same site. The supply chain that has the construction effort are immense, and TOCO will have to be particularly alert to addressing concerns that arise through this project.

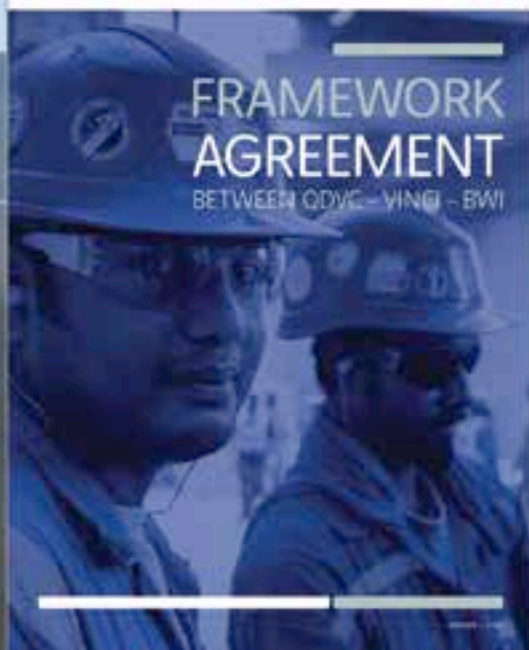
With Asia-Pacific countries increasingly winning host contracts for mega sports events like the Olympics, it is critical that TOCO/JOOC sets a high bar in terms of



INTERNATIONAL FRAMEWORK AGREEMENT with BESIX Group



FRAMEWORK AGREEMENT BETWEEN QDVC - VINCI - BWI



FIFA.com

Working conditions: FIFA and trade unions sign cooperation agreement for Russia 2018

(RUS/LOU) 28 Aug 2018





BWI
Building and Wood
Workers' International
www.bwint.org

Route des Acacias 54
CH-1227 Carouge GE
Switzerland



LO - Norway
Youngsgate 11, NO-0181 Oslo
Norway